ह्रीं
श्री अमृतेश्वरभैरव
पूजाविधिः
संपादक :
श्री ईश्वरस्वरूप
स्वामी लक्ष्मण जू महाराज
प्रकाशक :
ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
ईशबर (निशात), श्रीनगर, कश्मीर

श्री अमृतेश्वरभैरव पूजाविधिः

संपादक :

श्री ईश्वरस्वरूप

स्वामी लक्ष्मण जू महाराज

प्रकाशक :

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

ईशबर (निशात), श्रीनगर, कश्मीर

प्रकाशक :
ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
ईशबर (निशात), श्रीनगर, कश्मीर

प्रशासनिक कार्यालय :
ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
2-महेन्द्र नगर, कनाल रोड, जम्मू तवी
दूरभाष - 555755

शाखा कार्यालय :
ईश्वर आश्रम
10/12 ए, डी.एल.एफ. कुतुब एन्क्लेव, फेज़-1,
सिकन्दरपुर, गुड़गांव (हरियाणा)
दूरभाष : 8-251018

सम्पर्कभाष नई दिल्ली : 6943307

प्रथम संस्करण : 1996

मूल्य : सद्गुरु भक्ति और नित्य मनन

मुद्रक :
पैरामाउण्ट प्रिंटोग्राफ़िक्स, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3271568, 3281568

दिशा तुम्हारी मनन हमारा

अपने तप के प्रभाव से पृथ्वी को धारण करने वाले, सत्य की शक्ति से भगवान् भास्कर को भी अपने समीप बुला लेने वाले, सनातन सदाचार का सदा सेवन करने वाले, और वर्ण, धर्म जाति की ओर ध्यान न देकर सबकी रक्षा करने वाले महापुरुष कृपा एवं अनुग्रह का भाव संजोये हुए भक्त जनता का उद्धार करने के लिए जीवन की अन्तिम सांस तक कटिबद्ध रहते हैं। परम श्रद्धेय हमारे सद्‌गुरु महाराज ईश्वर स्वरूप जी भी महापुरुषों की इस परिभाषा के अपवाद नहीं थे। ऐसे महापुरुषों के विषय में आचार्य अभिनवगुप्त पाद भी कहते हैं कि–

अश्नन् यद्वा तद्वा संवीतो येन केनचित् शान्तः।
यत्र क्वचन निवासी, विमुच्यते सर्वभूतान्तरात्मा।।

आत्म साक्षात्कारी योगी, अपनी इच्छा से कुछ भी खाता हुआ जिस किसी भी वस्त्र से अपने शरीर को ढांपता हुआ, जहां कहीं भी निवास करता हुआ, शान्त भाव में प्रतिष्ठित, सारे प्राणियों को आत्मस्वरूप मानता हुआ, जीवन्मुक्त ही होता है।

ई० सन् १९८४ में आश्रम के अगल-बगल में ही अपने इष्टदेव अमृतेश्वर भैरव मन्दिर का निर्माण करके, ब्राह्ममुहूर्त में अबाध गति से, साधारण संसारियों की तरह पूजा के साधन एकत्रित करके सद्‌गुरु महाराज अमृतेश्वर की पूजा निर्वाण प्राप्ति तक भक्तिभाव से किया करते थे। चमत्कृतिरससेवी अभेदमयी पूजा के पुजारी सद्‌गुरु महाराज की सामान्य बाह्यस्तर पर आकर एवं पूजा करना रहस्यपूर्ण तो था ही पर किसी विशेष प्रेरणा से खाली नहीं था। शायद

वे कश्मीर-धरा पर आने वाली दुर्दिनों की छाया का पूर्वानुमान कर चुके थे अतः उसके कुप्रभाव से अपने भक्तों व शिष्यों को सुरक्षित रखने के लिए ही उन्होंने दैनिक पूजा का यह क्रम अपनाया था। निर्वाण प्राप्ति से तीन चार वर्ष पूर्व सद्‌गुरु महाराज अपनी पर-भैरव अवस्था में अमृतेश्वर भैरव की पूजा के चमत्कारों का खुल कर प्रदर्शन करने लगे। आतंकवाद के प्रारम्भिक दिनों में आतंक के प्रकोप से दूर रहने के लिए वे अपने भक्तों व शिष्यों के माथे पर मन्दिर का तिलक लगाकर निर्भय बनाते थे। हालांकि उन दिनों इस प्रकार विशेष आकार का तिलक लगाकर घूमना फिरना खतरे से खाली नहीं था पर इस तिलकास्त्र के सामने किसी ने कभी भी आवाज उठाने की हिम्मत नहीं की। यहां तक कि इतर वर्ग के भक्तों को भी सुरक्षित रहने के लिए इसी एक मात्र उपाय का वे प्रचार करते रहे।

प्रस्तुत पुस्तक "अमृतेश्वर पूजा विधि" निर्वाण प्राप्ति से कुछ समय पहिले सद्‌गुरु महाराज ने अपने ईश्वर आश्रम में इने गिने भक्त शिष्यों को दुहराई और इसी पूजा विधि से सदा अमृतेश्वर की पूजा करने का आग्रह किया। समस्त भक्त शिष्य वर्ग इस पूजा विधि से अपरिचित न रहे और आदरणीय गुरु महाराज के इस क्रम को अबाध रूप से चलाते रहे, इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस पूजा पुस्तक का प्रकाशन किया गया। यह पूजा पुस्तिका आपके पास एक धरोहर है अतः उसी रूप में इस का पालन-मनन व चिन्तन करना हम सबका परमकर्तव्य है। वैज्ञानिक युग में पले जाने वाले युवावर्ग की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए पूजा के विशेष पारिभाषिक शब्दों का सद्‌गुरुमुख से प्राप्त ज्ञान के आधार पर टिप्पणी के रूप में यथास्थान स्पष्टीकरण किया गया है। आशा है

कि वे इससे लाभान्वित होंगें।

आचार्य अभिनवगुप्त ने प्रमाद की परिभाषा देते हुए लिखा है कि

"दुर्लभस्य चिरतर संचित पुण्यशत लब्धस्य अपवर्गप्राप्तौ एक कारणस्य मानुष्यकस्य वृथा अतिवहनं प्रमादः।

यतः –

आयुषः क्षण एकोऽपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते।
स वृथा नीयते येन स प्रमादी नराधमः॥

अर्थात् बहुत कठिनता से तथा बहुत समय से जोड़े गये असंख्य पुण्यों के कारण मनुष्य जन्म प्राप्त होता है और यही मोक्षप्राप्ति का प्रधान कारण है। ऐसे दुर्लभ मनुष्य जन्म का फजूल में गंवाना ही "प्रमाद" है। क्योंकि–

अपनी आयु का एक क्षण, सभी अमूल्य रत्नों को न्योछावर करने पर भी, लौटाया नहीं जा सकता है। ऐसे आयु के अनमोल अनन्त क्षणों को जो प्राणी बेकार में बिताता है वही प्रमादी और मनुष्यों में नीच है।"

आचार्य अभिनवगुप्त के इस उपदेश को मन में धर कर प्रस्तुत पुस्तक की महत्ता को आंकना चाहिए और पठन-मनन व पूजन के रूप में नियत रूप से अभ्यास करके इसे सार्थक बनाना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगें तो सद्गुरु महाराज की यह थाती आप लोगों को सौंपकर मैं अपने को कृतकृत्य समझूँगा और हृदय के अन्तस्तल से आशीर्वाद देते रहूँगा कि आज की इस निर्वाण जयन्ती पर सद्गुरु महाराज आप सब का कल्याण करें। गीता जी में कहा है–

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्।।

अर्थात् जो प्राणी शास्त्रों के नियमों को एक ओर करके अपनी इच्छा से ही व्यवहार करता है वह सांसारिक सफलता, उत्तम गति और तात्त्विक सुखों से कोसों दूर रहता है।

इस अमूल्य पुस्तक को मूल्य की सीमा में बांधना उचित न समझकर इसके प्रकाशन का बीड़ा सद्गुरु महाराज के एक परमभक्त शिष्य ने गुप्त रूप से उठा कर इसे विना मूल्य वितरण करवाने का आग्रह किया। ईश्वर आश्रम ट्रस्ट के अधिकारी तथा सद्गुरु महाराज के हम सब भक्त शिष्य गुप्तदानी के इस पारलौकिक तथा ऐहिक उपकार के लिए आभारी हैं। सद्गुरु महाराज उनकी मनोकामना पूर्ण करें और पारमार्थिक क्षेत्र में उन्हें उन्नत बनायें।

प्रो० मखनलाल कुकिलू

ॐ

श्री अमृतेश्वर-भैरवाय नमः

पानी निम्नाङ्कित संकल्प मंत्र पढ़कर छोड़ना

अस्य श्री आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः

सुतलं छन्दः कूर्मो देवता [१]आसनशोधने विनियोगः॥

न्यास करना[२]

मेरुपृष्ठ ऋषये नमः शिरसि

(सिर पर चारों अंगुलियों का अगला पर्व रखना)

सुतलं छन्दसे नमः मुखे (मुख पर दोनों हाथ रखना)

कूर्मो देवतायै नमः हृदि (हृदय पर दायें हाथ की हथेली रखना)

---

१. सूर्योदय से पहले चार घड़ी (डेढ़ घन्टा) ब्राह्म मुहूर्त होता है। उसमें उठकर नित्य कर्म आरंभ करे। इस समय सोना शास्त्रनिषिद्ध है।

आसन - देव कर्म में आसनशुद्धि परम आवश्यक है। समभूमि पर आसन बिछावे। कुश, कम्बल (ऊनी) कृष्ण मृगचर्म, बाघ की खाल आदि में से कोई भी आसन होना चाहिये। स्मृतियों में कहा है—

वस्त्रासने वृथापूजा धरण्यां निर्धनो भवेत्।
काष्ठासने व्याधिभयं पाषाणे हानिरेव च॥
कुशासने ज्ञानवृद्धि, कम्बले चोत्तमागतिः।
कृष्णाजिने धनं पुत्राः, मोक्षः श्रीर्व्याघ्रचर्मणि॥

२. न्यास का तात्पर्य यह है -

न्यायोपार्जितवित्तानां अङ्गेषु विनिवेशनात्।
सर्वरक्षा करात् देवि ! न्यास इत्यमिधीयते॥

विधिपूर्वक प्राप्त की हुई परासंपत्ति का अंगों में (limbs) संनिवेश करने से तथा सर्वरक्षा करने के परिणामस्वरूप न्यास को न्यास कहा जाता है।

आसनशोधने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।।

(सारे अंगों को स्पर्श करना)

धरती को दो कुशा काण्ड अथवा अभाव में दो फूल आसन देना

ध्रुवा द्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि।।

हाथ जोड़कर पहिले श्रीगणेश का ध्यान करे

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः।।

फिर शंकर भगवान् का ध्यान करे

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

फिर अपने गुरु का ध्यान करे

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
गुरवे नमः, परमगुरवे नमः परमेष्ठिने-गुरवे नमः,
परमाचार्याय नमः, आदिसिद्धेभ्यो नमः।।

धरती को नमस्कार करना

पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस मन्त्र से आसन को जल से अभिषिक्त करके दायें हाथ से उसका स्पर्श करना चाहिए। एवं आसन शुद्ध होता है।

धरती पर गन्ध, अर्घ, फूल चढ़ाना

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो[1] नमः, अर्घो[2] नमः, पुष्पं[3] नमः।

दायें (Right) हाथ की अनामिका (the ring finger) के मध्य पर्व (middle-space) पर कुशाकाण्ड रख के अमृतेश्वर भैरव को न्यास करना।

अ नाभौ, उ हृदि, म शिरसि, ॐ भू पादयोः, भुवः हृदि, स्वः शिरसि।

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः

ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ महः अनामिकाभ्यां नमः

ॐ जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ॐ तपः सत्यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ भूः पादयोः, भुवः जान्वोः, स्वः गुह्ये, महः नाभौ, जनः हृदि, तपः कण्ठे, सत्यं शिरसि।

---

१. गन्ध - तन्त्रों में कहा है कि–

ग - गम्भीरापारदौर्भाग्य न - क्लेशनाशन कारणात्।
ध - धर्मज्ञानप्रदानात् च गन्ध इत्यभिधीयते।।

अगाध और अनन्त मुसीबतों को टालने से, दुखों को नष्ट करने से और धर्म ज्ञान दायक होने से गन्ध को गन्ध कहा जाता है।।

२. अक्षत - चावल के कण जो टूटे हुए न हो।

अ - अन्नदानात् कुलेशानि क्ष - क्षपिताशेष कल्मषात्
त - तादात्म्य करणात् देवि !
अक्षताः परिकीर्तिताः।।

अन्न देने से, सारे पापों का समूल नाश करने से और पर तत्त्व के साथ मेल कराने से अक्षत को अक्षत कहा जाता है।

३. फूल -पुण्य संवर्द्धनात् चापि पापौघ परिहारतः।
पुष्कलार्थ प्रदानात् च पुष्पमित्यभिधीयते।।

पुण्य की वृद्धि करने से, पापों की ढ़ेर को मिटाने से और प्रभूत धन प्रदान करने का कारण होने से पुष्प को पुष्प कहा जाता है।

ॐ भूः हृदयाय नमः, ॐ भुवः शिरसे स्वाहा,
ॐ स्वः शिखायै वषट्, ॐ महः कवचाय हुं,
ॐ जनः नेत्राभ्यां वौषट्, ॐ तपः सत्यं अस्त्रायफट्।
तत्सवितुः अंगुष्ठाभ्यां नमः, वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः,
भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, धीमहि अनामिकाभ्यां नमः,
धियो योनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, प्रचोदयात् करतल कर–
पृष्ठाभ्यां: नमः।

तत् पादयोः, सवितुर्जान्वोः, वरेण्यं कट्यां, भर्गो नाभौ,
देवस्य हृदये, धीमहि कण्ठे, धियो नासिकायां,
यः चक्षुषे, नः ललाटे, प्रचोदयात् शिरसि॥
तत्सवितुः हृदयाय नमः, वरेण्यं शिरसे स्वाहा,
भर्गो देवस्य शिरवायै वषट्, धीमहि कवचाय हुं,
धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट्, प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥
ॐ आपः स्तनयोः, ज्योतिर्नेत्रयोः, रसो मुखे, अमृतं ललाटे,
ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों शिरसि॥

अंगुलियों से कुशाकाण्ड छोड़ के अपने दोनों कन्धों (Shoulders) के ऊपर से तिल[१] नीचे दिये मन्त्र से फेंकना–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भुवि दिवि च स्थिताः।
ये दिक्षु विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

अब प्राणायाम करना नीचे दिये मन्त्र से–

ॐ जुं सः अमृतेश्वरभैरवाय नमः

---

१. स्मरण रहे कि तिल फेंकने से पूजा में विघ्न डालने वाली आसुरी शक्तियां दूर भागती हैं।

प्राणायाम विधि[१] = एक बार पूरक, दो बार कुम्भक, तीन बार रेचक॥
विष्टरसहित तांबे के अर्घपात्र में (कश्मीरी में जिसे 'नअरच कचुल'

---

१. प्राणायाम— केवल अंगुष्ठ से नाक के दाहिने छिद्र को दबा कर बायें छिद्र से धीरे धीरे उपरोक्त मंत्र को एक बार पढ़ें और सांस को खीचें। यह पूरक है। नाक के दोनों छिद्रों को (दाहिने छिद्र का) अंगुष्ट और बायें छिद्र को अनामिका (ring finger) और कनिष्ठिका (little finger) से बन्द करें और उपरोक्त मंत्र को धीरे धीरे दो बार पढ़कर सांस को रोके। यह कुम्भक है। फिर नाक के दायें (right side) छिद्र से अंगूठा हटा कर रोके हुए सांस को तीन बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर दायें नाक के छिद्र से ही धीरे धीरे छोड़े। इसे रेचक कहते हैं। स्मरण रहे कि बायें नाक के छिद्र पर रखी अनामिका और कनिष्ठिका को न उठायें। मध्यमा (middle finger) और तर्जनी (index finger) को सदा दूर रखें। कहा है—

अङ्गुष्ठेन पुरो धार्यं नासाया दक्षिणं पुनः।
कनिष्ठानामिकाभ्यां तु वामं प्राणस्य संग्रहे॥
पीडयेत् दक्षिणां नाडीमङ्गुष्ठेन तथोत्तराम्।
कनिष्ठानामिकाभ्यां च मध्यमां तर्जनी त्यजेत्॥

वैज्ञानिक दृष्टि से प्राणायाम का बडा महत्व है शरीर विज्ञान शास्त्र (Anatony) के अनुसार फेफड़े में सात करोड़ कई लाख छोटे छोटे छिद्र माने जाते हैं उनके द्वारा समस्त शरीर में रक्त का प्रसार होता है। प्राणायाम करने से जो वायु रुक कर भीतर जाती है वह बड़े वेग से फेफड़े में प्रवेश करती है। इससे उन छिद्रों में विद्यमान मल आदि दूर हो जाता है और खून भी शुद्ध होकर संचारित होता है। शास्त्रों के अनुसार प्राणशक्ति के आयाम अर्थात् विस्तार को प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम के द्वारा क्रियाशक्ति नियन्त्रित की जाती है। जो नाडियां वायु संचार के अभाव में रोगों को बढ़ावा देती हैं वे ही प्राणायाम से अपना काम ठीक करने लगती है। मन प्राण और वीर्य स्थिर हो जाते हैं जिससे आध्यात्मिक; लौकिक और पारलौकिक लाभ सुनिश्चित है।

पूरक — inhalation through the left nostril (इड़ा)
कुम्भक — Retaining the breath inside and drying up of the impurities of the body with वायुबीज।
रेचक — Exhalation through the right nostril (पिंगला)

कहते हैं) पानी रखकर अपने मुख और पैरों को नीचे दिये मन्त्र से छिड़कना

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति,
मानः शंस्योररुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥

नीचे दिये मंत्र से पवित्रक[2] धारण करना

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि
सहस्त्रधारं अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः॥

पहिले अमृतेश्वर - भैरव को गन्ध, अक्षत और फूल नीचे दिये इस

---

२. **पवित्रधारण** - कुशका पवित्रक न मिलने पर काशका (एक प्रकार की छोटी घास) पवित्रक बना लेना चाहिए। यदि वह भी न मिल सके तो अन्य दर्भों से अर्थात् मूंज, दूब (दूर्वा) जौ, गेहूँ के पौधे, बगई (एक प्रकार की घास) या सोना चांदी तथा तांबे का पवित्रक बनाना चाहिए। धातुनिर्मित पवित्रक उत्तम माना जाता है और उसके अशुद्ध होने का भय भी नहीं रहता है। कातीय-भाष्य में कहा है -

कुशाः काशाः शरा दूर्वा यव गोधूम बल्बजः।
सुवर्णं रजतं ताम्रं दश दर्भाः प्रकीर्तिताः॥

स्मरण रहे कि पवित्रक सदा दक्षिण अनामिका के प्रथम पर्व पर धारण करना चाहिए।

"आह्निक सूत्रावली" में निर्देश किया गया है

स्नाने दाने जपे होमे स्वाध्याये पितृ कर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने॥

अर्थात् स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, सन्ध्योपासन पितृकार्य तथा अभिवादन में दोनों हाथों में कुश धारण करना चाहिए। अर्थात् बायें हाथ में कुश और दायें हाथ में पवित्रक धारण करना चाहिए क्योंकि कात्यायन स्मृति में कहा है कि

वामः सोपग्रहः कार्यो दक्षिणः सपवित्रकः।

मन्त्र से चढ़ाना–

ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय समालभनं गन्धो नमः।
ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय अर्घो नमः।
ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय पुष्पं नमः॥

अपने आप को गन्ध आदि चढ़ाना

स्वात्मने शिवस्वरूपाय अमृतेश्वर भैरवाय
समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः॥

अपने दायें रखे (Rightside) रत्नदीप[१] को गन्ध आदि इस मन्त्र से चढ़ाना - (रत्नदीप को सदा दायें या सामने रखना चाहिए)

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं प्रतिकल्पितः॥
दीपाय समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः॥

अपने बायें (Leftside) रखे धूप पर गन्ध आदि इस मन्त्र से चढ़ाना

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः।
आधारः सर्व देवानां धूपोऽयं परिकल्पितः॥
धूपाय समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः॥

सूर्य भगवान् को गन्ध आदि (etc.) देना (निर्माल्य पात्र में)

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे।
नमः प्रत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमोनमः॥

गन्धर्वतन्त्र में कहा है -

दीपं देवस्य दक्षिणे पुरतो न तु वामतः।
वामतस्तु तथा धूपं अग्रे वा नतु दक्षिणे॥

अर्थात् देवता के दक्षिण भाग में या सामने रत्नदीप रखना चाहिए, वाम भाग में कदापि नहीं। इसी प्रकार धूप सदा वाम भाग में रखना चाहिए या सामने। पर दक्षिण भाग में कदापि नहीं॥

श्रीभास्कराय समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।।

विष्टर और अक्षत (चावल) समेत अर्घा पात्र (तांबे का) से 'यत्रास्ति' पढ़ते हुए पानी छोड़ना

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च।
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।
आत्मने शिवस्वरूपाय आधार शक्तये दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिः अस्तु दीपो नमः, धूपो नमः।।
ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण पक्षस्य/शुक्लपक्षस्य महापर्वणि.....

आषाढ़, श्रावण, फाल्गुन आदि प्रतिपदि/द्वितीयस्यां आदि या द्वितीयस्यां परतः तृतीयस्यां आदि

सोम, मंगल, बुध वासरान्वितायां श्री सद्गुरु प्रसाद सिद्ध्यर्थे भगवते भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय महादेवाय भीमाय देवाय ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय दीपो नमः धूपो नमः।।

यहां स्मरण रहे कि पहिले तिलयुक्त[1] पानी से अपने सारे

---

१. तिलयुक्त पानी–
मनुस्मृति में कहा है–
ब्रह्मयज्ञ (गृहस्थ के दैनिक पाप ब्रह्मयज्ञ से नष्ट होते हैं), पितृयज्ञ (पितृतर्पण को कहते हैं), देवयज्ञ (देवताओं के प्रीत्यर्थ हवन और पूजन को कहते हैं), भूत यज्ञ - (पशुओं पक्षियों आदि को बलि देने को कहते हैं) और मनुष्ययज्ञ मनुष्य या (अतिथि पूजा को कहते हैं) इस प्रकार ये पांच यज्ञ हैं।
पितृयज्ञ अर्थात् पितरों का नाम लेकर प्रातः पूजा करने के समय तर्पण करने को या पितर संबन्धी अन्य कर्मों को पितृयज्ञ कहते है अतः सदा इस यज्ञ के फल को पाने के लिए पितृतर्पण करना चाहिए। विष्णुधर्मसूत्र (अध्याय २०)

पितृपक्ष/मातृपक्ष के पितरों को बायें जन्यू करके दीप धूप तत्सत् ब्रह्म आदि पढ़कर गोत्र और नाम लेकर तथा सम्बन्ध (relation) को भी जतलाकर दीपः स्वधा धूपः स्वधा कहते हुए जल डालते रहे। यह जल अमृतेश्वर भैरव या उसकी प्रणाली से दूर डाले।

जैसे–

तत् सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ
अद्य अमुक मासस्य (जो महीना चलता हो)
कृष्ण पक्षस्य/शुक्लपक्षस्य तु महापर्वणि

अमुक तिथौ (जो तिथि हो अर्थात् प्रतिपदा से लेकर अमावसी/पूर्णिमा तक) अमुक वासरान्वितायां (जो दिन सोमवासर से रविवासर तक हो)

१. पित्रे (अपने पिता का गोत्र सहित नाम लेना)

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

में कहा है कि प्रेतत्व से छूटने के बाद जब पितर पितृलोक में जाते हैं तो बन्धुबान्धवों द्वारा नाम गोत्रोच्चारण पूर्वक दिया गया तर्पण (जलदान) या अन्न उन्हें अवश्य प्राप्त होता है, पितर चाहे देवयोनि में हो, चाहे नरकयोनि में हो चाहे मनुष्य योनि में हो चाहे पशुपक्षी योनि में हो, अपने बान्धवों द्वारा दिये गये तर्पण या अन्न को उसी योनि के भोजन के रूप में अवश्य प्राप्त करते हैं। जैसे पितर यदि देवयोनि में हो तो तर्पण या अन्न आदि उत्तम गन्ध के रूप में उन्हें प्राप्त होता है, मनुष्य योनि में हो तो वही तर्पण या अन्न आदि उत्तम व्यञ्जन पदार्थ या स्वादिष्ठ भोजन के रूप में या soft drinks के रूप में उन्हें प्राप्त होता है, यदि पशु पक्षी योनि में हो तो उनके अच्छे खाद्य पदार्थ के रूप में प्राप्त होता है, यदि नरक योनि में हो तो वहां भी उस समय यातनायें नहीं दी जाती हैं और आराम का क्षण प्राप्त होता है। इस प्रकार पितृयज्ञ करने से पितर तथा पितृयज्ञ करने वाला भी पुष्ट होता है।

२. **पितामहाय** (अपने दादा का) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**
३. **प्रपितामहाय** (अपने परदादा का) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**
४. **वृद्ध प्रपितामहाय दीपः स्वधा धूपः स्वधा।**

फिर

१. **मात्रे** (अपनी माता का मायके के नाम के साथ ससुराल का नाम गोत्र सहित इस प्रकार लेना जैसे – मात्रे मुगलानी चेत्युच्यमान लीलावती देव्यै काश्यप्यै दीपः स्वधा धूपः स्वधा) यह एक उदाहरण (example) है इसी तरह से अपनी माता का (मायके और घर) का नाम गोत्र सहित लेकर दीप धूप देना। फिर

२. **पितामह्यै** (अपनी दादी का) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**
३. **प्रपितामह्यै** (अपनी परदादी का) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**
४. **वृद्ध प्रपितामह्यै दीपः स्वधा धूपः स्वधा**

इसी तरह से अपने नाना नानी आदि का भी दीप धूप देना जैसे–

मातामहाय (नाना का नाम गोत्र सहित लेना)
दीपः स्वधा धूपः स्वधा

प्रमातामहाय (पर नाना का नाम गोत्र सहित लेना)
दीपः स्वधा धूपः स्वधा

वृद्धप्रमातामहाय दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

मातामह्यै (नानी का नाम) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**

प्रमातामह्यै (पर नानी का नाम) **दीपः स्वधा धूपः स्वधा**

वृद्ध प्रमातामह्यै दीपः स्वधा धूपः स्वधा॥

अन्य समीप सम्बन्ध के पितरों को भी दीप धूप नाम गोत्र सम्बन्ध सहित यहीं पर देना।

फिर दायें जञू करके तिल पानी में डालकर अमृतेश्वर की प्रणाली पर डालना

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।
नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।

तत्सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुकमासस्य कृष्ण/ शुक्लपक्षस्य महापर्वणि अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायां
श्री गुरवे स्वामिन् गौतम गोत्रोद्भवाय श्री लक्ष्मणाय
दीपः स्वधा धूप स्वधा
श्रीपरमगुरवे श्री महताबकाकाय शर्मणगोष्यवात्स्याय
दीपः स्वधा धूपः स्वधा
श्री परमेष्ठिने गुरवे श्रीरामदेवाय भूत उपमन्यवे
दीपः स्वधा धूपः स्वधा

अब बायें जन्यू करके तिलयुक्त पानी प्रणाली पर न डाल कर दूसरे स्थान पर डाले –

तत्सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य अमुक पक्षस्य तु महापर्वणि अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायां
श्रीगुरुपित्रे नारायणदेवस्वामिन् गौतमाय
दीपः स्वधा धूपः स्वधा
श्री गुरु पितामहाय तोत स्वामिन् गौतमाय
दीपः स्वधा धूपः स्वधा
श्री गुरु प्रपितामहाय भवानी स्वामिन् गौतमाय
दीपः स्वधा धूप स्वधा
श्री गुरु वृद्ध प्रपितामहाय निधान स्वामिन् गौतमाय
दीपः स्वधा धूप स्वधा

श्री गुरु मात्रे कतिजी चेत्युच्यमान अरणी माली देव्यै गौतम्यै

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

श्री गुरु पितामह्यै मीरी चेत्युच्यमान हारी देव्यै गौतम्यै

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

श्री गुरु प्रपितामह्यै माली चेत्युच्यमान श्रीमाली देव्यै गौतम्यै

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

श्री गुरु वृद्ध प्रपितामह्यै मद्या चेत्युच्यमान भाग्यवानी देव्यै

गौतम्यै दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

श्री गुरु मातामहाय नानदत्त आत्रेयाय

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

श्री गुरु प्रमातामहाय व्यद्रदत्त आत्रेयाय

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

श्री गुरु वृद्ध प्रमातामहाय साहिबदत्त आत्रेयाय

दीपः स्वधा धूपः स्वधा

इति श्रीगुरुपक्षान्तर्गतेभ्यः

समस्त माता पितृभ्यः दीपः स्वधा धूपः स्वधा॥

इसके पश्चात् दाहिना जञू करके, तिल, अक्षत, गन्ध विष्टर और पानी अर्घपात्र में डाल के नीचे दिये तीन मन्त्रों से तीन फूल डालना—

१. संव्वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तुवः।

२. संसृष्टा तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।

३. संव्या वः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः

आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम॥

इसी पानी को शिवलिंग पर नीचे दिये मन्त्र से डालना। यह जीवादान मन्त्र है —

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव,
मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव,
बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्दत्तां तेन जीव॥

हाथ में दो दर्भकाण्ड या पुष्प रख के चामर सा न्यास अमृतेश्वर भैरव को करना—

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, न तर्जनीभ्यां नमः, मः मध्यमाभ्यां नमः, शि अनामिकाभ्यां नमः, वा कनिष्ठिकाभ्यां नमः, य करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हृदयाय नमः न शिरसे स्वाहा, मः शिरवायै वौषट् शि कवचाय हुं, वा नेत्रत्रयाय वषट् य अस्त्राय फट्।

न ईशान मूर्ध्ने नमः मः तत्पुरुष वक्त्राय नमः शि अघोरहृदयाय नमः वा वामदेवगुह्याय नमः य सद्योजातमूर्तये नमः।

न ऊर्ध्ववक्त्राय नमः, मः पूर्ववक्त्राय नमः शि दक्षिणवक्त्राय नमः वा उत्तरवक्त्राय नमः य पश्चिमवक्त्राय नमः।

अब अक्षत समेत दो दर्भकाण्ड हाथ में रखके पूजा करने की आज्ञा लेना—

तन्महेशाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि
तन्नः अमृतेश्वर भैरवः प्रचोदयात्॥ तीन बार पढ़ना।

तत् सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मास पक्ष तिथि वार सहित पढ़ना **श्रीसद्गुरु प्रसाद सिद्ध्यर्थे श्री अमृतेश्वर भैरवस्य अर्चाम् अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।**

तिल, पीली सरसों और जौ दाने तीनों मिलाकर अपने दोनों कन्धों के ऊपर से पीछे की ओर फेंकना, फिर दो दर्भकाण्ड या पुष्प हाथ में रखकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ने के बाद अमृतेश्वर के सामने रखना—

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरेश्वर।

आसनं[1] दिव्यं ईशान! दास्येऽहं परमेश्वर।।

इति श्री अमृतेश्वर भैरवस्य इदं आसनं नमः॥

अब अक्षत (चावल) समेत दो दर्भकाण्ड हाथ में रखकर पूजा[2] करने की आज्ञा लेना–

ॐ भगवते भवदेवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय युष्मान् वः पुजयामि ॐ पूजय।

दोदर्भ काण्ड छोड़े बिना केवल अक्षत कन्धों से फेंककर नया अक्षत पहिले रखे दो दर्भकाण्डों के साथ हाथ में रखकर– अमृतेश्वर भैरव का आवाहन[3] करना

---

१. आ - आत्मसिद्धि प्रदानात् च
स - सर्व रोग निवारणात्।
न - नवसिद्धि प्रदानात् च आसनं कथितं प्रिये।।

हे प्रिये ! आत्मसिद्धि प्रदान करने से सारे रोगों से छुटकारा दिलाने के कारण और नौ सिद्धियों से सम्पन्न कराने से आसन को आसन कहा जाता है।

२. पूर्वजन्मानुशमनात् जन्ममृत्यु निवारणात्।
सम्पूर्ण फल दानात् च पूजेति कथिता प्रिये।।

हे प्रिये ! पूर्व जन्मों का शमन करने से, जन्म मृत्यु को हटाने से, और सम्पूर्ण शुभ फल को देने के कारण पूजा को पूजा कहा जाता है।। त्रिकतन्त्रसार में कहा है–

आनन्दप्रसरः पूजा तां त्रिकोणे प्रकल्पयेत्।

अर्थात् आनन्द के प्रसार को ही पूजा कहते है। यह पूजा त्रिकोण पर करनी चाहिए। त्रिकोण प्रणाली युक्त शिवलिङ्ग का वाचक है।

३. देवं पूजार्थमाह्वानमावाहनमिति स्मृतम्।
इष्टदेव को पूजा के लिए बुलाना ही आवाहन है।

ॐ भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिं देवं, उग्रं देवं, महादेवं, भीमं देवं, ईशानं देवं, पार्वती सहितं परमेश्वरं, ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय॥

यह पढ़कर अक्षत समेत दोनों दर्भकाण्डों को दोनों कन्धों के ऊपर से फेंकना फिर हाथ जोड़कर नीचे दिये प्रत्येक श्लोक से अमृतेश्वर भैरव को फूल लगाना—

१. **लिंगेऽत्र भक्तदयया क्षणमात्रमेकं**
   स्थानं व्यधाय भव मद्विहितं पुरारे।
   सर्वेश! विश्वमय! हृत्कमलाधिरूढः
   पूजां गृहाण भगवन्! भवमेऽद्य तुष्टः॥

२. **भूमेर्जलात्तु पवनादनलाद् हिमांशोः**
   उष्णांशुतो हृदयतो गगनात् समेत्य।
   लिंगेऽत्र सन्मणिमये मदनुग्रहार्थं
   भक्त्यैकलभ्य! भगवन्! कुरु सन्निधानम्॥

३. **त्वं सर्वगोऽसि भगवन् किल यद्यपि त्वां**
   आवाहयामि यथा व्यजनेन वायुम्।
   गूढ़ो यथैव दहनो मथनादुपैति
   आवाहितोऽसि तथा दिशतु मां तवार्चाम्॥

४. **मालाधराच्युत विभो! परमार्थमूर्ते!**
   सर्वज्ञ! सर्वकरणादि शुभ स्वभावे।
   लिंगेऽत्र सन्मणिमये मदनुग्रहार्थं
   भक्त्यैकलभ्य! भगवन्! भव सन्निधानम्॥

अब दोनों हाथों से तालियां बजाते हुए तीन बार नीचे दिये हुए श्लोक को पढ़ना—

भगवन्! पार्वतीनाथ! भक्तानुग्रह कारक।
अस्मद्दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो॥

अब हाथ जोड़कर मानसिक पूजा करके यह पढ़ना–

इत्याहूय तु गायत्रीं त्रिः समुच्चार्य तत्त्ववित्।

मनसा चिन्तितैर्द्रव्यैः देवमात्मनि पूजयेत्॥

दो तीन जऊँ दाने दोनों कन्धों के ऊपर से फेंककर प्राणायाम (ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः) इस मन्त्र से करना पहिले लिखी विधि के अनुसार।

श्रीअमृतेश्वर को अब पाद्य देने के लिए तांबे के पात्र (नऽयरयक़चुल) में पानी डालना फिर उस पानी को अपने हाथ में डालकर–

"शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये

शंय्योरभिस्रवन्तु नः"

यह मन्त्र पढ़कर वापिस तांबे के पात्र में डालना। फिर उस पानी में

"लाजाश्च कुंकुमं चैव सर्वौषधिसमन्वितं।

दर्भाङ्कुरं जलं चैव पंचागं पाद्यलक्षणम्॥

लाजा (लाय) केसर, सर्वौषधि, विष्टर, जल, ये पांच चीज़ डालकर श्री अमृतेश्वर भैरव को पैर धोना यह मन्त्र पढ़कर–

भगवन्तः पाद्यं पाद्यं[1]

महादेव महेशान महानन्द परात्पर।

गृहाण पाद्यं मत् दत्तं पार्वती सहितेश्वर॥

ॐ भगवते भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय, ईशानाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय पाद्यं नमः॥

तांबे के पात्र का सारा पानी डालना। अब नया पानी तांबे के पात्र

---

१. पाद्यं–धर्मार्थ काम मोक्षाणां संस्थानं पाद्यम्।
अर्थात् धर्म अर्थ काम और मोक्ष का स्थान पाद्य माना जाता है।

में डालना फिर उसी पानी को अपने हाथ में डालकर—

शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः॥

यह मन्त्र पढ़कर पानी हाथ का वापिस तांबे के पात्र में डालना फिर उस पानी में—

आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः।
यवाः सिद्धार्थकाश्चेति ह्यर्घ्यं अष्टांगं उच्यते॥

दूध, पानी, कुशाविष्टर, घी, दही, चावल, जऊं, और सर्षप (पीली सरसों) ये आठ द्रव्य (अर्घ्य अर्थात् श्री अमृतेश्वर भैरव के हाथ मुंह धोने की चीजें हैं) डालकर यह मन्त्र पढ़ना—

भगवन्तोऽर्घ्यं अर्घ्यम्[१]
त्र्यम्बकेश सदाधार विपदां प्रतिघातक।
अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्पत्सर्वार्थ साधक॥

ॐ भगवन् भवदेव, शर्व देव, रुद्र देव, पशुपते देव, उग्र देव, भीम देव, महादेव, ईशान देव, पार्वती सहित परमेश्वर, ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरव इदं वोऽर्घ्यं नमः॥

यम मन्त्र पढ़कर सारा पानी तांबे के पात्र में से अमृतेश्वर भैरव पर डालना।

अब अमृतेश्वर भैरव को, साफ पानी पात्र में डालकर आचमन, अर्थात् मुंह सफा करवाना नीचे दिये मन्त्र से—

त्रिपुरान्तक दीनार्त्ति नाश श्रीकण्ठ तुष्टये।
गृहाणाचमनं देव पवित्रोदक कल्पितम्॥

---

१. अर्घ्यं— अर्घ्येण लभते कामान् अर्घ्येण लभते धनम्।
पुत्रायुः सुख मोक्षादि दानात् अर्घस्य वै लभेत्॥

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय आचमनीयं नमः॥

अब अमृतेश्वर भैरव के शरीर पर लगी द्रव्यों की मलिनता हटाने के लिए थोड़ा सा पानी उस पर यह मन्त्र पढ़ के डालना–

त्रिकाल काल कालेश संहार करणोद्यत।
स्नानं तीर्थाहृतैस्तोयैः गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय मन्त्रस्नानीयं नमः॥

अब अमृतेश्वर भैरव को स्नान देने के लिए ये पन्द्रह (Fifteen) पदार्थ पानी में डालना–

पानीयान्तरितैः पयोदधि-घृत क्षौद्रे क्षुभिः सौषधैः
व्रीह्यद्भिः कुसुमोदकैः फलजलैः सिद्धार्थ लाजोदकैः।
गन्धाद्भिः शुभहेमरत्नसलिलैः इत्थं सदा चोत्तमैः
दद्यात् पंचदशाम्बुना सह महास्नानानि शम्भो क्रमात्॥

१. दूध, २. दही, ३. घी, ४. पानी, ५. शहद, ६. खांड (शक्कर), ७. सर्वौषधी, ८. शाली (चन्दन पानी), ९. फूल, १०. मेवा, ११. सर्षप (पीली सरसों), १२. लाजा (लायि) फुलियां, १३. गन्ध, १४. सुवर्ण पत्र, और १५. रत्न।

फिर इसी पानी से नीचे दिये मन्त्रों से अमृतेश्वर भैरव का स्नान करना–

पहिले बहुरूपगर्भ से अघोरेभ्योऽथ...............ॐ नमः

परमाकाश शायिने.........घोरातिृ घोर मूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः॥

फिर 'रुद्रमन्त्र चमकानुवाक्यं[1]' या जिस दिन समय कम हो तो नीचे दिये मन्त्रों से–

१. असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्राः अधि भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

२. येऽस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

३. ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवं रुद्राः उपाश्रिताः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

४. ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

५. ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषां सहस्रयोजनेऽऽव धन्वानि तन्मसि॥

६. येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिवतो जनान्।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

७. ये भूतानां अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

८. ये पथीनां पथि रक्षय ऐड़ मृदाय व्युधः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

९. ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

---

१. रुद्रमन्त्र चमकानुवाक्य अन्त पर अलग रखा है।

१०.य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

१. ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षं इषवः तेभ्यो दश प्राची दश दक्षिणा दश प्रतीचीः दश उदीची दश ऊर्ध्वाः तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृड़यन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्मे दधामि॥

२. ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातं इषवः तेभ्यो दश प्राची दश दक्षिणा दश प्रतीचीः दश उदीची दश ऊर्ध्वाः तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृड़यन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्मे दधामि॥

३. ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषां अन्नं इषवः तेभ्यो देश प्राची दश दक्षिणा दश प्रतीचीः दश उदीची दश ऊर्ध्वाः तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृड़यन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्मे दधामि॥

यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु
यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना
विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः॥

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय पञ्चदश स्नानानि नमः॥

ॐ नमो देवेभ्यः

कण्ठोपवीती गले में जन्यू रखके – **स्वाहा ऋषिभ्यः**

अपसव्येन बायीं ओर जन्यू रखके – **स्वधा पितृभ्यः**

यहां पर फिर पितरों का पहिले लिखी विधि अनुसार तिलयुक्त पानी

प्रणाली से बाहर डालकर तर्पण करना यह कहकर–

तत् सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण/ शुक्ल पक्षस्य तु महापर्वणि अमावस्यां/पूर्णिमायां अमुक वासरान्वितायां (सोमवासर–आदि)

श्री पिता (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

श्री पितामह (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

श्री प्रपितामह (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

श्री वृद्ध प्रपितामह (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

माता (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

पितामही (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

प्रपितामही (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

मातामह/मातामही (नाम गोत्र सहित) **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां**

प्रमातामह/प्रमातामही (नाम गोत्र सहित)

तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

वृद्ध प्रमातामह/वृद्ध प्रमातामही (नाम गोत्र सहित)

तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

अन्य समीप सम्बन्धियों का भी नाम गोत्र सहित तर्पण करना। उसके पश्चात् दाहिने ओर जन्यू करके तत् सद् ब्रह्म० आदि सारा पढ़कर तिलयुक्त पानी अमृतेश्वर की प्रणाली पर डालना–

श्रीमत् श्री गुरु ईश्वरस्वरूप श्री लक्ष्मण स्वामिन् गौतम

तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

परमगुरु श्री महतावकाक शर्मण गोष्य वात्स्य

तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

परमेष्ठिगुरु श्री रामदेव भूत उपमन्यु तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

बायीं ओर जन्यू करके निर्माल्य में जल डालना

श्री गुरुपिता नारायण स्वामिन् गौतम तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु पितामह तोत स्वामिन् गौतम तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु प्रपितामह भवानी स्वामिन् गौतम
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु वृद्ध प्रपितामह निधान स्वामिन् गौतम
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु माता कतिजी चेत्युच्यमान अरणिमाली देवी गौतमी
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु पितामही मीरी चेत्युच्यमान हारी देवी गौतमी
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु प्रपितामही माली चेत्युच्यमान श्रीमाली देवी
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु वृद्ध प्रपितामही मद्या चेत्युच्यमान भाग्यवानी देवी
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु मातामह नानदत्त आत्रेय तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु प्रमातामह व्यद्रदत्त आत्रेय तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां
श्री गुरु वृद्ध प्रमातामह साहिब दत्त आत्रेय
तृप्यतां तृप्यतां तृप्यतां

फिर दायीं ओर जन्यू रखके–

आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरम्।
जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु ॐ अमृतेश्वरस्य अंगीकरणं एवं अस्तु॥

फिर पात्र में पानी डालकर, ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः। इस मन्त्र से सात बार मंत्रित करना फिर अपने माथे तक लेके अमृत से भरा हुआ ध्यान करके अमृतेश्वर भैरव के सिर पर डालना। इति

मंत्रगुडकम्॥
बायें हाथ की हथेली पर पानी डाल के फिर अमृतेश्वर भैरव की आरात्रिका (आलत) निकालना नीचे दिये मन्त्र से—

"गृह्णन्तु शिव संभक्ता भूताः प्रासाद बाह्यगाः।
पञ्च भूताश्च ये भूतास्तेषां अनुचराश्च ये॥

ते तृप्यन्तु स्वधा वौषट् यह पढ़कर उस पानी को बायें कन्धे के पीछे की ओर से फेंकना।

अब अमृतेश्वर के पादों का पानी नेत्रों को मलना याने भगलिंग[1] मुद्रा से नेत्रों को स्पर्श करना नीचे दिये मन्त्र से—

भगस्य हृदयं लिङ्गं लिङ्गस्य हृदयं भगः।
तस्मै ते भगलिङ्गाय उमारुद्राय वै नमः॥ तीन बार पढ़ना॥
उतिष्ठ भगवन् शम्भो! उतिष्ठ गिरिजापते!।
उतिष्ठ त्रिजगत्नाथ! त्रैलोक्ये मंगलं कुरु॥

फिर अमृतेश्वर भैरव को सजाने के स्थान पर फूल छोड़ छोड़ कर

---

१. भगलिंगमुद्रा— खेचरी साम्य की अवस्था पर पहुंचे हुए सिद्धों के लिए इस भगलिंग मुद्रा का निर्देश तन्त्रों में किया गया है। सामान्य रूप से वर्तुलाकार मोड़े हुए दाहिने हाथ के अंगूठे को खोलकर रखे। उस मोड़े हुए हाथ में पीछे से बायें हाथ का अंगूठा ठूंसे और ऊर्ध्वाकार रखे तो दायें हाथ के अंगूठे से संघट्टस्थान का तीन बार स्पर्श कर आखों का स्पर्श करे। क्योंकि त्रिंशिका शास्त्र में कहा है कि हृदय अर्थात् पुंलिंग और स्त्रीलिंग का संघट्टरूपी हृदय ही मुख्य रूप से पूजनीय कहा गया है। इस संघट्ट को सांसारिक न समझकर ज्ञानभावना पूर्ण समझना चाहिए। श्री तन्त्रालोक में भी कहा है—

शिवशक्त्यात्मकं रूपं भावयेत् च परस्परम्।
न कुर्यान्मानवीं बुद्धिं रागमोहादि संयुताम्।
ज्ञानभावनया सर्वं कर्तव्यं साधकोत्तमैः॥

इस भगलिंग मुद्रा को ही शैवशास्त्रों में 'अपरव्याप्ति' का नाम दिया है।

पढ़ना–

आसनाय नमः, पद्मासनाय नमः, वृषभासनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः।

किम् आसनं ते वृषभासनाय
किम् भूषणं वासुकि भूषणाय।
उमाकलत्राय किं अस्ति देयं
वागीश! किं ते वचनीयं अस्ति।।

फिर बहुरूपगर्भ पढ़ना।

अब अमृतेश्वर भैरव को नीचे दिये मन्त्र से वस्त्र पहिनना–

कालाग्निरुद्र! सर्वज्ञ! वरदाभय दायक!।
वस्त्रं गृहाण देवेश! दिव्यवस्त्रोपशोभित!।।

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।।

अब अमृतेश्वर भैरव को जन्यू पहिनना–

ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।। ३।।
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा, उपवीतेन उपनह्यामि।
श्री अमृतेश्वर भैरवनाथस्य अंगीकरणम्।।

फिर यज्ञोपवीत श्री अमृतेश्वर भैरवनाथ के गले में सजाते हुए पढ़ना–

सुवर्णतारैः रचितं दिव्ययज्ञोपवीतकम्।
नीलकण्ठ! मया दत्तं गृहाण मदनुग्रहात्॥

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः।

अब अमृतेश्वर भैरव को गन्ध (तिलक) चढ़ाना नीचे दिये मन्त्र से—

सर्वेश्वर! जगत् वन्ध्य! दिव्यासन सुसंस्थित!
गन्धं गृहाण देवेश! दिव्यगन्धोपशोभितम्॥

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय समालभनं गन्धो नमः॥

अब अमृतेश्वर भैरव को अक्षत (चावल) और फूल नीचे दिये मन्त्र से चढ़ाना—

सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर!
पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे॥

ॐ भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय अर्घो नमः पुष्पं[१] नमः॥

---

१. पुष्प— गन्धर्व तन्त्र में कहा है—

पुष्पमूले वसेद्ब्रह्मा पुष्पमध्येतु केशवः। पुष्पाग्रेऽहं स्थितो नित्यं सर्वे देवाः स्थिता दले। ब्रह्म विष्णु शिवादीनां पुष्पमेव सदा प्रियम्॥

स्मरण रहे कि विल्वपत्र को, डंढ़ी काटकर, अधोमुखं करके अमृतेश्वरभैरव के मस्तक पर अर्पण करना चाहिये।

अब धूप[1] चढ़ाना नीचे दिये मन्त्र से–

महादेव! मृडानीश! जगदीश! निरञ्जन!।
धूपं गृहाण देवेश! साज्यं गुग्गुल कल्पितम्॥

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण/शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वाराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय धूपं परिकल्पयामि नमः॥

अब रत्नदीप[2] चढ़ाना नीचे दिये मन्त्र से–

हिरण्यबाहो! सेनानीरोषधीनांपते शिव!
दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्यत्रिवर्तिकम्॥

तत् सद् ब्रह्म० अद्यतावत० भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वाराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः॥

अब कर्पूर (Camphor) की टिकिया या ढली को जलाकर नीचे दिये

---

१. धूप - धूताशेष महादोष पूतिगन्धप्रभावतः।
परमानन्द जननात् धूप इत्यभिधीयते॥

प्रदूषण युक्त वातावरण की दुर्गन्धि से उत्पन्न सारे महान दोषों को हटाकर परम आनन्द देने से धूप की महत्ता कही गई है।

२. दीप - दीर्घाज्ञान महाध्वान्ताहंकार परिवर्जनात्।
परतत्त्वप्रकाशात् च दीप इत्यभिधीयते॥

दीर्घ अज्ञान को, महान अन्धकार को, तथा अहं भावना को हटाने से और परतत्त्व को प्रकाशित करने से दीप की महत्ता कही गई है॥

मन्त्र को पढ़ के अमृतेश्वर को अर्पण करना–

कर्पूरदीपं सुमनोहरं प्रभो! ददानि ते देववर! प्रसीद भो।
पापान्धकारं त्वरितं निवारय प्रज्ञान दीपं मनसि प्रज्वालय॥

तत् सद् ब्रह्म० पढ़कर भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय कर्पूरदीपं समर्पयामि नमः॥

अब अमृतेश्वर भैरव को नीचे दिये मन्त्र को पढ़कर चामर करना–

मयूर पुच्छैः देवेश! शुभ्रैः चामरकैः तथा।
ध्वजं छत्रं वीजनं च गृहाण परमेश्वर॥

महिम्नस्तोत्र अथवा व्यासचराचर भाव विशेषं० इत्यादि स्तोत्र पढ़ के **भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वाराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय चामरं परिकल्पयामि नमः॥**

आईना अमृतेश्वर भैरव को दिखाना–

यस्य दर्शन मात्रेण विश्वं दर्पण बिम्बवत्।
तस्मै ते परमेशाय मकुरं कल्पयाम्यहम्॥

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय आदर्शं परिकल्पयामि नमः॥

पानी निर्माल्य में छोड़ते हुए पढ़े–

एताभ्यो देवताभ्यः दीपो नमः धूपो नमः इति श्री अमृतेश्वर

भैरवस्य सानुचरस्य अर्घ्यदानादि अर्चन विधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु॥

अब अमृतेश्वर भैरव को 'चरु' देना याने तांबे[1] के पात्र में दूध, घी, शक्कर, दही, शहद इकट्ठा करके [2]मधुपर्क चढ़ाना—

क्षीराज्यमधुसंमिश्रं शुभ्रदध्ना समन्वितम्।
षड् रसैः च समायुक्तं गृहाणान्नं निवेदये॥

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय चरुं परिकल्पयामि नमः॥

अब नीचे दिये श्लोकों में से प्रत्येक श्लोक के बाद फूलों की अञ्जलि (Two handfuls) अमृतेश्वर पर चढ़ाना—

ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः। (दस बार दस फूल चढ़ाना)

१. **अन्तरालीन तत्त्वौघं चिदानन्दघनं महत्।**
यत्तत्त्वं शैवधामाख्यं तदोमित्यभिधीयते॥

२. **तादृगात्मपरामर्शशालिनी शक्तिरस्य या।**
देशकालापरिच्छिन्ना सा जुं शब्देन कथ्यते॥

३. **सिसृक्षोल्लेखनिर्माण शक्ति त्रितय निर्भरा।**
जगतो येशिता शक्तिः सा स इत्युच्यते स्फुटम्॥

४. **स्वशक्त्यभिव्यक्तिमये मोक्षेऽस्यैश्वर्य योगतः।**
स्वोपासकानाममृतेश्वरत्वं तस्य सुस्फुटम्॥

---

१. तांबे का पात्र प्रशस्त माना जाता है, कहा है—
ताम्रे देवाः प्रमोदन्ते ताम्रे देवाः स्थिताः सदा।

२. मधुपर्क—ज्योतिष्टोम यज्ञ और अश्वमेघयज्ञ करने से जो पुण्य प्राप्ति होती है वह सब मधुपर्क में प्रतिष्ठित है।

५. नीलहर्षादि भेदेन यद् बाह्याभ्यन्तरं जगत्।
अहमित्यामृशन्पूर्णो भैरवः समुदाहृतः॥

६. देह प्राण सुखादीनां न्यग्भावाद् भक्त संहतेः।
या चिदात्मनि विश्रान्तिर्नमः शब्देन सोच्यते॥

७. त्रयी सप्तचतुर्युग्ममये त्रितयवर्त्मनि।
स्थितो यः शक्ति सहितः स जयत्यमृतेश्वरः॥

८. आत्मेन्दुधामनि युगेश नरेश पुत्र-
चित्रां त्रिशूल बिलधामनि सृष्टशक्तिम्।
वैसर्गिके चितिपदेऽप्यथ पुण्डरीकां
काञ्चित्परां त्रिकपरां प्रणमामि देवीम्॥

९. श्रीमत्सदाशिव पदेऽपि महोग्र काली
भीमोत्कट भ्रुकुटिरेष्यति भंगभूमिः।
इत्याकलय्य परमां स्थितिमेत्य काल-
संकर्षिणीं भगवतीं हठतोऽधितिष्ठेत्॥

१०. तन्मध्ये तु परादेवी दक्षिणे च परापरा
अपरा वामश्रृंगे तु मध्यश्रृंगोर्ध्वतः श्रृणु।
या सा संकर्षिणी काली परातीता व्यवस्थिता॥

११. कृत्वाधार धरां चमत्कृति रस प्रोक्षाक्षण क्षालिता-
मात्तैर्मानसतः स्वभावकुसुमैः स्वामोदसंदोहिभिः।
आनन्दामृतनिर्भर स्वहृदयानर्घार्घपात्र क्रमात्
त्वां देव्या सह देहदेव सदने देवार्चयेऽहर्निशम्॥

१२. नाना स्वाद रसामिमां त्रिजगतीं हृच्चक्रयन्त्रार्पिताम्
ऊर्ध्वाधस्त विवेक गौरवभरान्निष्पीड्य निष्यन्दितम्।
यत्संवित्परमामृतं मृतिजराजन्मापहं जृम्भते
तेन त्वां हविषा परेण परमे सन्तर्पयेऽहर्निशम्॥

१३. कालाग्नि रुद्रात्प्रसूतं च तेजो
भूरि स्फुटं दीप्ततरं विचिन्त्यम्।
ऊर्ध्वे स्थिता चन्द्रकला च शान्ता
पूर्णामृतानन्दरसेन देवि॥

१४. तदोभयोर्वह्नि विषानुयोगात्
तेजश्शशांकौ द्रवितौ च यस्मात्।
तेजश्शशांक स्फुट मिश्रितत्वात्
भवेत् तदार्क त्ववताररूपम्॥

१५. परस्पर समाविष्टौ चन्द्रेऽग्नीष्टीटिभे शशी
चन्द्रं सृष्टिं विजानीयादग्निः संहार उच्यते
अवतारो रवि प्रोक्तो मध्यस्थः परमेश्वरः॥

१६. ततः सकाशात्प्रभवाप्ययौ स्तो
यस्मादयं विश्वसमग्रभेदः।
एतच्च विद्वान् विदितार्थभावो
ध्यायेत युक्त्यात्मचिदर्करूपम्॥

१७. द्वारेशा नवरन्ध्रगा हृदयगो वास्तुर्गणेशो महान्
शब्दाद्या गुरवः समीरदशकं त्वाधारशक्त्यात्मकम्।
चिद्देवोऽथ विमर्शशक्ति सहितः षाड्गुण्यमंगावलि-
र्लोकेशाः करणानि यस्य महिमा तं नेत्रनाथं स्तुमः॥

१८. विगलति भवदौर्गत्यं मोक्षश्री श्रयति हृत्कजं कचति।
प्रसरति परमानन्दो यत्र तदीशार्चनं जयति॥

१९. कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

२०. क्लेशान्विनाशय विकासय हृत्सरोज-
मोजो विजृम्भय निजं नरिनर्तयांगम्।

चेतश्चकोर चिति चन्द्र मरीचि चक्रं
आचम्य सम्यगमृतीकुरु विश्वमेतत्॥

२१. भवन्मय स्वात्म निवास लब्ध-
सम्पद्भराभ्यर्चित युष्मदंघ्रिः।
न भोजनाच्छादनमप्यजस्र-
मपेक्षते यस्तमहं नतोऽस्मि॥

२२. आधीनामगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम्।
उपद्रवाणां दलनं महादेवमुपास्महे॥

२३. ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशु मृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

२४. त्वय्येव भातः स्मृति-विस्मृती ते
द्वयोरपि त्वं स्वयमेव भासि।
तथापि सांमुख्य सुखाभिवर्षिणी
स्मृतिः प्रिया ते नहि विस्मृतिर्मे॥

२५. महेश्वरे वा जगतामधीश्वरे जनार्दनेवा जगदन्तरात्मनि।
न कापि भेदप्रतिपत्तिरस्ति मे तथापि भक्तिस्तरुणेन्दु शेखरे॥

२६. भानुना तुहिनभानुना बृहद्भानुना च विनिवर्तितं न यत्।
येन तज्झगिति शान्तिमान्तरं ध्वान्तमेति तदुपास्महे महः॥

२७. संग्रहेण सुख दुःख लक्षणं मां प्रति स्थितमिदं श्रुणु प्रभो।
सौख्यमेष भवता समागमः स्वामिना विरह एव दुःखिता॥

२८. दासधाम्नि विनियोजितोऽप्यहं स्वेच्छयैव परमेश्वर त्वया।
दर्शनेन न किमस्मि पात्रितः पाद संवहन कर्मणापि वा॥

२९. शक्तिपातसमये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित्।
अद्य मां प्रति किमागतं यतः स्व प्रकाशनविधौ विलम्बसे।।
हर! विश्वाखिलाधार! निराधार! निराश्रय!।
पुष्पांजलिं इमं शम्भो! गृहाण वरदो भव।।
भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय पुष्पांजलिं समर्पयामिनमः।।
अब अमृतेश्वर भैरव को नीचे दिये गये मन्त्र को पढ़ने के पश्चात् फल सामने रखे–
राजराजाधिदेवेश! निराधार! निरास्पद!।
फलं गृहाण मत् दत्तं नारिकेलादिकं शुभम्।।
भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय फलं समर्पयामि नमः।।
अब अमृतेश्वर भैरव को ताम्बूल चढ़ाना–
(सब्ज़ इलायची छोटी, लौंग, काली मिर्च, सुपारी, छुआरा, सोगी को इकट्ठा करके पात्र में रख के ताम्बूल बनता है)
शाश्वतात्ममहानन्द! मदनान्तक! धूर्जटि!
गृहाण पूग ताम्बूल दल पत्रादि संयुतमू।।
भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय ताम्बूलं परिकल्पयामि नमः।।

मन से आधी परिक्रमा करें–

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति शिवस्यार्ध [1]प्रदक्षिणात्॥

अब अमृतेश्वर को अष्टांग प्रणाम नीचे दिये मन्त्र को पढ़कर करे–

मृड़ानीशाद्य मे सर्वान् अपराधान् अनेकशः।
क्षम स्वामिन् प्रणामं मे गृहाणाष्टांग संयुतम्॥
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा।
मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः॥

पानी (निर्माल्य में) डालना पात्र से–

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यं आज्यं अद्यादिनेऽद्य
यथा संकल्पात् सिद्धिरस्तु अन्नहीनं क्रिया हीनं
विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यत् गतं
तत् सर्वं अच्छिद्रं अस्तु। एवं अस्तु। इति श्री अमृतेश्वर-
भैरवस्य अङ्गीकरणम्॥

अब पानी वाले पात्र में से दायें हाथ पर पानी डालकर वापिस पात्र में नीचे लिखे मन्त्र से डाले–

शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिवन्तु नः॥

अब इस पानी को अमृतेश्वर भैरव के पास

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ जुं सः अमृतेश्वर

---

१. कहा है – एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके।
हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्ध प्रदक्षिणा॥
अर्थात् देवी की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात बार, गणेश की तीन बार विष्णु की चार बार और शंकर की अर्ध प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

भैरवाय अपोशानं नमः यह कहकर डाले।

यदि दक्षिणा डालनी हो तो फिर शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः। यह पढ़कर पानीवाले पात्र में से दायें हाथ पर पानी डालकर वापिस पात्र में डाले और उस पानी से दक्षिणा को गीला करके भगवते भवायदेवाय अमृतेश्वर भैरवाय दक्षिणायै-तिलहिरण्यरजत निष्कर्णंददानि। एताः देवताः सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥ यदि नैवेद्य अर्पण करना हो तो नैवेद्य विधिपूर्वक रखकर विजयेश्वर जन्त्री में लिखा हुआ नैवेद्यमन्त्र पढ़कर जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः यह मन्त्र दस बार पढ़कर नैवेद्य चढ़ावे॥

विगलति भवदौर्गत्यं मोक्ष श्री श्रयति हृत्कजं कचति।
प्रसरति परमानन्दो यत्र तदीशार्चनं जयति॥३॥

यह तीन बार पढ़ कर फूल चढ़ाये॥ फिर हाथ में दो कुशा काण्ड और अक्षत लेके

तन्महेशाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि
तन्नः अमृतेश्वरभैरवः प्रचोदयात्॥

तीन बार पढ़कर तत्सद् ब्रह्म॰

भगवतो भवस्य देवस्य, शर्वस्य देवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपतेः देवस्य उग्रस्य देवस्य महादेवस्य ईशान देवस्य अमृतेश्वर भैरवस्य

पूजनमच्छिद्रं सम्पूर्णं अस्तु एवमस्तु॥

अब पानी में जौ दाने डालकर पढ़े–

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पणं नमः॥

अब हाथ में फूल लेकर साष्टांग प्रणाम करते हुए पढे–

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर!।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः।

अब पानी (निर्माल्य में) डालते हुए पढ़िये–

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै नमः, ओषधिभ्यः, नमोवाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि। इत्येतासामेव देवतानां सलोकतां सायुज्यं सार्ष्टिं सामीप्यं आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायं अधीते।। अमृतेश्वरभैरवस्य अंगीकरणम्। सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।

फूल अमृतेश्वर पर चढ़ाना–

पूजितोसि मया भक्त्या भगवन् गिरिजापते!।
स गौरीको मम स्वान्तं विश विश्रान्ति हेतवे।।

जय गुरुदेव।

जप[1] विधि :–

अब एक माला (१०८) मन्त्र जाप करना। पहिले संकल्प के लिए पानी (निर्माल्य में) डालना–

संकल्प विधि

तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य
अमुक मासस्य कृष्ण/शुक्लपक्षस्य तु महापर्वणि

---

१. जप– जन्मान्तर सहस्रेषु कृतपाप प्रणाशनात्।
परदेव प्रकाशात् च जप इत्यभिधीयते।।

तन्त्रों में कहा है कि हजारों जन्मों में किये गये पापों को नष्ट करने से और परमात्म देव का प्रकाशन करने से 'जप' इन दो वर्णों (ज, प) का अतीव माहात्म्य कहा गया है।

अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायां श्री अमृतेश्वरभैरवस्य प्रसन्नार्थे श्री सद्‌गुरु प्रसाद प्राप्त्यर्थे अमृतेश्वर भैरवस्य जपे विनियोगः।

न्यासः=जुं हृदयाय नमः, व्यों शिरसे स्वाहा ईं शिरवायै वौषट्, ज्यों नेत्रत्रयाय वषट् फट् अस्त्राय फट्। जुं अंगुष्ठाभ्यां नमः, व्यों तर्जनीभ्यां नमः। ईं मध्यमाभ्यां नमः, ज्यों अनामिकाभ्यां नमः। फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्राणायामः (ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः इसी मन्त्र से। पूर्वोक्त विधि के अनुसार ध्यानम् – अन्तरालीन से लेकर सजयत्यमृतेश्वरः तक पढ़िये। फिर माला को हाथ में लेकर नीचे दिये मन्त्र से पूजन एवं प्रार्थना करे–

> **मां माल्ये महामाल्ये सर्व शक्ति स्वरूपिणि!।**
> **चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात् मे सिद्धिदाभव।।**
> **अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।**
> **जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद ममसिद्धये।।**

फिर "ॐ जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः" इसी मन्त्र से जप करे। जप के पश्चात् फिर प्राणायाम करे पूर्वोक्त विधि के अनुसार और पानी डालते हुए पढ़े–

> **अनेन अमृतेश्वर भैरवमन्त्र जपेन श्री अमृतेश्वर भैरवः प्रीयतां प्रीतोऽस्तु।**

फिर सिर पर माला रखकर पढ़े–

> **गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।**
> **सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।**

जय गुरुदेव।

जप के विषय में ध्यान देन योग्य बातें –

१. भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :–
"यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि" अर्थात् यज्ञों में मैं जपयज्ञ हूँ।

२. तन्त्रों में कहा है कि–
जपयज्ञात् परो यज्ञो नापरोऽस्तीह कश्चन।
तस्मात् जपेन धर्मार्थ काममोक्षांश्च साधयेत्॥
अर्थात् जपयज्ञ से दूसरा यज्ञ संसार में उत्तम नहीं है। अतः जप से ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करें।

३. जप तीन प्रकार का होता है–
वाचिक, उपांशु और मानस।
इनमें से वाणी से मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण वाचिक जप है। जिससे दूसरों को शब्द सुनाई न दे, इस प्रकार जरा जरा सा ओंठ हिलाकर सूक्ष्म उच्चारण पूर्वक मन्त्र का जप उपांशु जप कहलाता है। मन बुद्धि के द्वारा मन्त्र के वर्ण, शब्द और अर्थ का चिन्तन करना मानस जप है। इनमें से वाचिक जप से उपांशु जप और उपांशु जप से मानस जप श्रेष्ठ है॥

४. जपकी सिद्धि के लिए, मन में संतोष, पवित्रता, मौनभाव और मन्त्र के अर्थ का विचार करना, उद्वेग एवं खेद का न होना आवश्यक है।

५. अपने दायें हाथ को सदा वस्त्र से ढ़ककर तथा पवित्रक धारण किये जप करे वही जप सफल होता है। जो ऐसा नहीं करता उसका जप निष्फल होता है। कहा है व्यास स्मृति में–
वस्त्रेणाच्छाद्य तु करं सपवित्रं सदा जपेत्।
तस्य स्यात् सफलं जाप्यं तत् हीनं अफलं मतम्॥

६. मन्त्र जप की गिनती अवश्य रखनी चाहिए क्योंकि बिना संख्या

का जप आसुर जप कहलाता है कहा है बृहत् पराशर संहिता में–

असंख्यमासुरं यस्मात् तस्मात् तत् गणयेत् ध्रुवम्।

और भी कहा है –

व्यग्रचित्तेन यत् जप्तं यत् जप्तं मेरुलंघने।
असंख्यातं तु यत् जप्तं, तत् सर्वं निष्फलं भवेत्॥

७. **प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम्।**
सायं जपेत् च नासाग्रे एष जप्यविधिः स्मृतः।
अर्थात् सुबह के समय हाथ नाभि के पास, मध्याह्न में हृदय के पास तथा सायं नासिका के पास रख कर जप करना उत्तम है।

८क. जप के समय किसी से बोलना नहीं चाहिए, अपने शरीर के अंगो को हिलाना नहीं चाहिए। न सिर और न गर्दन हिलाये, न जंभाई करे, न नींद करे, न थूके, न शरीर के निचले अंगों का स्पर्श करे। एकान्त स्थान में स्थिर आसन से बेठकर केवल मन्त्र देवता और मन्त्र के अर्थ का चिन्तन करे। यदि इसके विपरीत जप होता है तो उसका फल राक्षस तथा सिद्ध हरण कर लेते हैं।

८ब. जप करने के समय यदि मन इधर उधर भटकने लगे तो उसे वहां से जबर्दस्ती से हटा कर ध्येय पर लाना चाहिए। भटकने नहीं देना चाहिंए।

९. घर में जप का फल एक गुणा, गाय की समीपता में सौ गुणा पवित्र उद्यान और तीर्थ में हजार गुणा, नदी के तट पर लाख गुणा, देव मन्दिर और गुरु के आश्रम में करोड़ गुणा तथा शिवालय में अनन्त गुणा फल मिलता है।

१०. **यस्मिन् स्थाने जपं कृत्वा शक्रो हरति तज्जपम्।**
तन्मृदा लक्ष्मकुर्वीत ललाटे तिलकाकृति॥
व्यास स्मृति के अनुसार आसन के नीचे की मिट्टी का तिलक माथे पर करे या नीचे के स्थान को अन्त में हाथ लगाकर माथे पर रखे, ऐसा न करने से जप का फल इन्द्र को प्राप्त होता है॥

११. पंचमुखी रुद्राक्ष की माला, लाल चन्दन की माला या तुलसी की माला पर जप करना चाहिए। जप करते समय माला को मध्यमा या अनामिका के प्रथम पर्व पर रखना चाहिए। तर्जनी और कनिष्ठिका से माला को न छुवे।
माला १०८ दानों की होनी चाहिए। माला में रखे सुमेरु (मोटा दाना) को कभी स्पर्श न करे।

१२. माला में १०८ दानें ही क्यों है इस विषय में कहा है कि
रुद्राणां शतमेकंतु भैरवाष्टक योजितम्।
कृत्वा मेरुं महारुद्रं मालाचाष्टोत्तरं शतम्॥
अर्थात् प्रधान रुद्रों की संख्या एक सौ है, भैरवों की संख्या आठ है। इन आठ भैरवों को रुद्रों के साथ मिलाकर एक सौ आठ की संख्या होती है। सुमेरु को महारुद्र, माना जाता है। अथवा—
चतुर्विंशति तत्त्वाश्च नाड्या द्वासप्ततिस्तथा।
द्वादशाङ्गुलमुच्छ्वासो माला चाष्टोत्तरं शतम्॥
अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय, पांच तन्मात्र, प्रकृति, पुरुष, मन, बुद्धि, अहंकार, ईश्वर, सदाशिव, शक्ति और शिव, ये २४ तत्त्व, प्रधान ७२ नाडियां और १२ अंगुल आयाम का उच्छ्वास, इस प्रकार इन्हीं १०८ संख्याओं की प्रतीक भूता १०८ दाने की माला मानी जाती है। अथवा
षड्नवत्याङ्गुलायामं स्वदेहं द्वादशाङ्गुलः।
बहिः प्राणो याति चैवं माला चाष्टोत्तरशतम्॥

अर्थात् अपने शरीर का आयाम ९६ अंगुल माना जाता है और प्राण वायु भी १२ अंगुल अन्दर से बाहर निकलती है इस प्रकार इन्हीं १०८ संख्याओं की प्रतीक माला मानी जाती है। अथवा

नवान्ता वर्णिता संख्या कालोऽयं द्वादशावधिः।
हत्वापरस्परं चैवं माला चाष्टोत्तरं शतम्॥

अर्थात् संख्या एक से नौ तक मानी जाती है काल की अवधि बारह है। बारह से नौ को गुणन करके = ९ X १२ = १०८ की संख्या माला की ही प्रतीक है।

श्री कुलार्णवतन्त्र में कहा है कि–

अक्षमाला द्विधा प्रोक्ता कल्पिताऽकल्पितेति च।
कल्पिता मणिभिः क्लृप्ता मातृकास्यादकल्पिता॥

अर्थात् अक्षमाला दो प्रकार की होती है।

कल्पित और अकल्पित। कल्पित माला मणियों (रुद्राक्ष आदि) की माला है। अकल्पिता – आदिक्षान्ता मातृका - अ से क्ष तक के वर्ण समुदाय को मातृका कहते हैं और यही अकल्पिता है।

आदिक्षान्ताक्षवर्णत्वात् अक्षमालेति कीर्तिता।
अनुलोम विलोमाभ्यां गणयेत् मन्त्रवित्तमः॥

अर्थात् 'अ' वर्ण से 'क्ष' वर्ण तक के वर्ण समुदाय से उद्भूत अक्षमाला है। मन्त्र ज्ञाता जप संख्या की गणना इसी के आधार पर अनुलोम (forward order) और विलोम (reverse order) क्रम से करे।

शिवसूत्र में भी कहा है "मातृका चक्र संबोधः" अर्थात् सद्गुरु के प्रसाद से ही शिष्य को अक्षमाला चक्र का ज्ञान होता है। अक्षमाला – अ से क्ष तक (अ आ इ ई से श, ष, स, ह, क्ष तक) के पचास वर्ण की सारे विश्वविस्तार की प्रतीक है। विश्व

शिवतत्त्व (अनुत्तर तत्त्व) से आरंभ होकर पृथिवी तत्त्व में समाप्त होता है। एवं ३६ तत्त्व, इन पचास अक्षरों अर्थात् मातृका शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसकी महत्ता यहां तक कही गई है कि जो साधक इस वर्ण समुदाय का (अ से क्ष तक) ही केवल सावधान मन से चिन्तन करता है वह असंख्य मन्त्रों का जप करता है क्योंकि सारे मन्त्र इसी वर्ण समुदाय से बने हैं।

स्मरण रहे

न धारयेत् करे मूर्ध्नि कण्ठे च जप मालिकाम्
जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले क्षिपेत्॥

अर्थात जिस माला से जप करते हो उस माला को न हाथ में धरें, न गले में डाले। जप के समय जप करने के पश्चात् उसे शुद्ध स्थान पर संभाल के रखें॥

शैवक्रम के अनुसार शैवयोगी के लिए शाक्तोपाय साधना में नियत रूप में मन्त्रों का उच्चारण करना माला आदि को हाथ में धारण करना जप नहीं है अपितु ऐसा शैवयोगी प्राकृतिक पूर्णाहन्ता में प्रविष्ट होकर जो कुछ व्यवहार करता है, या प्राणों की चेष्टाओं का आचरण करता है वह सारा इस योगी के लिए जप ही बन जाता है। इस की सारी चेष्टायें मन्त्ररूपता से ही स्फुरित होती है। चाहिये वह वार्तालाप करे, या कोई श्लोक पढ़े, या गाली गलौच का प्रयोग करे, उठे, बैठे, भ्रमण करे, स्नान करे वह सारा व्यवहार अहं परामर्श की एकता के साथ ही चलता है।

शिवसूत्र में ऐसे योगी के लिए ही कहा है

कथा जपः॥

जय गुरुदेव।

रुद्रपञ्चके चमकानुवाक्यम्।

ॐ नमः शिवाय।
प्रणतोऽस्मि महादेव प्रपन्नोऽस्मि सदाशिव।
निवारय महामृत्युं मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते॥
देवं सुधाकलशसोमकरं त्रिनेत्रं
पद्मासनं च वरदाऽभयदं सुशुभ्रम्।
शङ्खाऽभयाब्जवरभूषितया च देव्या
वामेऽङ्कितं शमनभङ्गहरं नमामि॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ १॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ २॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिकम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखमुद्योतकारिणम्॥ ३॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम्।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ ४॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमऽव्ययम्॥ ५॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक्ततो यजनमारभेत्॥ ६॥
मृत्युञ्जय महादेव पाहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं भवबन्धनात्॥ ७॥
आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवैर्महर्षिभिः।
आवाहयामि भक्त्या त्वां गृहाणार्चां महेश्वर॥ ८॥

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ।
शिव शङ्कर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते।। ९।।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मत्रं च त्र्यम्बकम्।। १०।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं रयिपोषणम/पुष्टिवर्धनं/रोगनाशनं
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ३।।

आ त्वा वहन्तु हरयः सचेतसः, श्वेतैरश्वैरिह केतुमद्भिर्वाताजवेन बलमद्भिर्मनोजवा यातु शीघ्रं मम रुद्राय हव्यन्देवानां च ऋषीणां चासुराणां च पूर्वजं, सहस्राक्षं, विरूपाक्षं, विश्वरूपं, महादेवं, शिवमावाहयाम्यहम्।।

आवाहयाम्यहं देवमीश्वरं पार्वतीपतिम्।
वृषभासनमारूढं नागाभरणभूषितम्।। १।।
प्रीयतां यजमानस्य तुष्टो भूयाज्जगत्पतिः।
शुक्लवर्णो महातेजाः शुक्लस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। २।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। ३।।

ॐशतरुद्रियन्देवानां रुद्रशमनं, भवाय, शर्वायश्च, प्रत्यु-त्क्रान्तानुवाकौ, देवर्षी रुद्रदैवत्यस्त्रिष्टुप्च्छन्दश्चयने विनियोगः। नमस्ते देवा रौद्रमानुष्टुभमाद्या गायत्री, पञ्चमषष्ठ्यौ पांक्त्यन्ता महापंक्तिर्मा भैरेकपदा जगत्यनुष्टुप्त्रिष्टुप् महाबृहती यवमध्या रुद्रो देवता चरमेष्टिका, अस्य रुद्रस्य प्रश्नस्य अनुष्टुप्च्छन्दः अघोर ऋषिः सङ्कर्षणमूर्तिः सुरूपो योऽसावादित्यः परः पुरुषः सएव देवता, अग्निः क्रतुचरुमायामिष्टिकायां शतरुद्रे विनियोगः। सकलस्य रुद्राध्यायस्य श्रीमहारुद्रो देवता एका गायत्री छन्द्रस्तिस्त्रोऽनुष्टुभस्तिस्त्रः पङ्क्तयः, सप्ताऽनुष्टुभौ, द्वे

जगत्यौ, परमेष्ठी ऋषिः, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-
निवारणार्थ सद्‌गुरु प्रसाद प्राप्त्यर्थे चमानुवाक सहितरुद्र-
मन्त्रपाठे/होमे/स्नाने/पुष्पार्चने वा विनियोगः॥

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि॥

गात्रं भस्मसितं सितं च हसितं हस्ते कपालं सितं
खट्वाङ्गं च सितं सितं च वृषभं कर्णे सिते कुण्डले।
गङ्गाफेनसितो जटाजलसितश्चन्द्रः सितो मूर्धनि
सोऽयं सर्वसितो दधातु विभवं पापक्षयं शङ्करः॥

"आशुः शिशान इति शुक्रज्योतिष्मानंशुः प्रजननं सर्वाः प्रजाः
कश्यपा इति कश्यपस्य वाजस्य प्रसवोऽग्नेः"॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः, शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ १॥

सङ्क्रन्दनेनाऽनिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्व युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥ २॥

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संसृष्टा सयुध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥ ३॥

बृहस्पते परिधीया रथेन रक्षोहा मित्राँ अपबाधमानः।
प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नऽस्माकमेध्यविता रथानाम्॥ ४॥

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिज्जैत्रायनो रथमाऽतिष्ठ गोवित्॥ ५॥

गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमऽज्मा प्रमृणन्तमोजसा।
इमं स जाता अनुवीरयध्वमिन्द्रसखायमऽनुसं व्ययध्वम्॥ ६॥

अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडऽयुध्योऽस्माकं सेना अवन्तु प्रयत्सु॥ ७॥
इन्द्र एषां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणो पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मारुतोयन्तु मध्ये॥ ८॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञः आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्।
महामनसां भुवनस्य वानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥ ९॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वऽस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वऽस्मान्नु देवा अवता भरेष्वा॥ १०॥
"होम पर खड़ा होके यह आहुति देना"॥

ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च सत्यश्चर्तपाश्चात्यँहा, ईदृङ्, चान्यादृङ् च, सदृङ्च, प्रतिसदृङ्च, मितश्च, संमितश्च, सभारा, ऋतश्च, सत्यश्च, ध्रुवश्च, धरणश्च, धर्ता, च विधर्ता, च विधारय, ऋतजिच्च, सत्यजिच्च, सेनाजिच्च, सुषेणश्चान्तिमित्रश्च, दूरे अमित्रश्च, गण ईदृक्षास, एतादृक्षास ऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतान मितासश्च संमितासो नो अद्य सभारसो मरुतो यज्ञे, अस्मिन्निन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनु वर्त्मानो यथेन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽनु वर्त्मानोऽभवन्नेवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानु वर्त्मानो भवन्तु॥

ॐ नमः शिवाय वरदाय ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवे।
बाहुभ्यामुत ते नम उत त इषवे नमः॥ १॥
या ते रुद्र शिवा तनूरऽघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताऽभिचाकशीहि॥ २॥
यामिषुङ्गिरिशन्त! हस्ते बिभर्ष्यऽस्तवे।
शिवां गिरित्र ताङ्कुरु माहिंसीः पुरुषं जगत्॥ ३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदऽयक्ष्मं सुमना असत्॥ ४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भय सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परात्सुवः॥ ५॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ये चेमे।
रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्राक्षो वैषां हेड ईमहे॥ ६॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्यन्नुतैनमुदहार्यः॥ ७॥
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयति नः।
नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे॥ ८॥
अथो य अस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं नमः।
प्रमुञ्च धन्वनस्तमुभयो रात्र्योर्ज्याम्॥ ९॥
याश्च ते हस्त इषवः परास्ता भगवो वप।
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवानुत॥ १०॥
अनेशन्नस्येषव आभूरस्य निषङ्गथिः।
या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः॥ ११॥
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मेण परिभुज।
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः॥ १२॥
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधीहि तम्।
नमांसि त आयुधायाऽनातताय धृष्णवे॥ १३॥
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे॥ १४॥
निशीर्य शल्यानां मुखं शिवो नः सुमना भव।
यात इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः।
शिवा शरव्या या तव तया नो मृड जीवसे॥ १५॥

मानो महान्तुमुत मानो अर्भकं मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्।
मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १॥

मानस्तोके तनये मान आयौ मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ २॥

नमस्ते अस्तु भगवः, परमेश्वर, विश्वश्वर, महादेव, शिव, सशिव, सदाशिव, त्रिकालकाल, कालाग्निरुद्र, नीलकण्ठ, अमृतेश्वर-भैरव, बहुरूप, अघोर, तत्पुरुष, महामृत्युञ्जय भट्टारक ते नमो नमः॥

अग्नाविष्णू सजोषसे इमा वर्धन्तुवां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥
वाजश्चमे, प्रसवश्चमे, प्रयतिश्चमे, प्रसृतिश्चमे, धीतिश्चमे, ऋतुश्चमे, स्वरश्चमे, श्लोकश्चमे, श्रावश्चमे, श्रुतिश्चमे, ज्योतिश्चमे, स्वश्चमे, प्राणश्चमे, व्यानश्चमे, अपानश्चमे, असुचमे, चित्तंचम, आधीतंचमे, वाक्चमे, मनश्चमे, चक्षुश्चमे, श्रोत्रंचमे, दक्षश्चमे, बलंचम, ओजश्चमे, सहश्चम, आत्माचमे, तनूश्चमे, शर्म चमे, वर्म चमे, अङ्गानि चमे, अस्थीनि चमे, परूंषि चमे, शरीराणिचम, आयुश्चमे, जराचमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो।
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो॥
नमः शिष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो।
नमो बभ्लुषाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो॥
नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो।
नमो भवस्य हेत्यै जगतस्पतये नमो॥
नमो रुद्रायाऽततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो।
नमः सूतायाऽहन्त्याय वनानांपतये नमो॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो।
नमो मन्त्रिणे वाणिज्याय कक्ष्याणां पतये नमो।।
नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमः।
नम आक्रन्दाय त उच्चैर्घोषाय सत्त्वानां पतये नमो।
नमः कृत्सवीताय धावते पत्तीनां पतये नमः।।
अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः।
द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

ॐ ज्यैष्ठ्यंचम, आधिपत्यं चमे, मन्युश्चमे, भामश्चमे, अमश्चमे, अम्भश्चमे, जेमाचमे, महिमा चमे, वरिमाचमे, प्रथिमाचमे, वर्ष्मा चमे, द्राघ्वाचमे, वृद्धंचमे, वृद्धिश्चमे, सत्यंचमे, श्रद्धाचमे, जगत्चमे, धनंचमे, क्रीडाचमे, मोदश्चमे, वशश्चमे, त्विषिश्चमे, सूक्तंचमे, सुकृतंचमे, जातंचमे, जनिष्यमाणं चमे, वित्तंचमे, वेद्यंचमे, भूतंचमे, भविष्यं चमे, सुगंचमे, सुपथं चमे, ऋद्धंचम, ऋद्धिश्चमे, क्लृप्तं चमे, क्लृप्तिश्चमे, मतिश्चमे, सुमतिश्चमे। यज्ञेन कल्पताम्।।

नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो।
नमो निषिङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो।। १।।

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो।
नमो निचराय परिचरायाऽरण्यानां पतये नमो।। २।।

नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो।
नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो।। ३।।

नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो।
नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो।। ४।।

नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्चवो नमो।
नम इषुमद्भ्यो धन्वायिद्भ्यश्च वो नमो।। ५।।

नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो।
नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो॥ ६॥
नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो।
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो॥ ७॥
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो।
नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो॥ ८॥
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो।
नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो॥ ९॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजैभिरावृतम्॥

ॐ शञ्चमे, मयश्चमे, प्रियश्चमे, अनुकामश्चमे, कामश्चमे, सौमनसश्चमे, भगश्चमे, द्रविणं चमे, भद्रंचमे, श्रेयश्चमे, वश्यश्चमे, यशश्चमे, यन्ताचमे, धर्ताचमे, क्षेमचमे, धृतिश्चमे, संवित्चमे, ज्ञातंचमे, विश्वञ्चमे, महश्चमे, सूश्चमे, प्रसूश्चमे, सीरंचमे, लयश्चम, ऋतञ्चमे, अमृतंचमे, अयक्ष्मंचमे, अनामयंचमे, जीवातुश्चमे, दीर्घायुत्वंचमे, अनमित्रं चमे, अभयञ्चमे, सुगंचमे, शयनंचमे, सूषाचमे, सुदिनं चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥
नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यद्भ्यश्च वो नमो।
नम उगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमो॥ १॥
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्य वो नमो॥ २॥
नमः कृच्छ्रेभ्यः कृच्छ्रपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो॥ ३॥
नमः सेनाभ्यः सेनानीभ्यश्च वो नमो।
नमो रथेभ्यो वरूथिभ्यश्च वो नमो॥ ४॥

नमो महद्भ्योऽर्भकेभ्यश्च वो नमो।
नमो युवभ्य आशिनेभ्यश्च वो नमो॥ ५॥

नमः क्षुत्तृद्भ्यः संगृहीतृभ्यश्च वो नमो।
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो॥ ६॥

नमः कुलालेभ्यः कर्मरिभ्यश्च वो नमो।
नमः पुञ्जिष्ठेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो॥ ७॥

नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो।
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः॥ ८॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥
ऊर्क्चमे, सूनृताचमे, पयश्चमे, रसश्चमे, घृतं च मे, मधुचमे, सग्धिश्चमे, सपीतिश्चमे, कृषिश्चमे, वृष्टिश्चमे, जैत्रंचम, औद्भिदंचमे, रयिश्चमे, रायश्चमे, पुष्टंचमे, पुष्टिश्चमे, विभुश्चमे, प्रभुश्चमे, पूर्णं चमे, पूर्णतरंचमे, कुयवं चमे, क्षिति चमे, अन्नं चमे, इक्षुश्चमे, व्रीहयश्चमे, यवाश्चमे, माषाश्चमे, तिलाश्चमे, नीवाराश्चमे, श्यामकाश्चमे, अणवश्चमे, प्रियङ्गवश्चमे, गोधूमाश्चमे, मसूराश्चमे, मुद्गाश्चमे, खल्वाश्चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

नमो भवाय च रुद्राय च, नमः शर्वाय च पशुपतये च।
नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ १॥

नमो व्युप्तकेशाय च कपर्दिने च।
नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च॥ २॥

नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च।
नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥ ३॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च।
नमो बृहते च वर्षीयसे च॥ ४॥

नष्टो वृद्धाय च संवृध्वने च।
नमोऽग्रयाय च प्रथमाय च॥ ५॥
नमो आशवे चाऽजिराय च।
नमः शीभाय च शीघ्र्याय च॥ ६॥
नम ऊर्म्याय चाऽवस्वन्याय च।
नमो नाद्याय च द्वीप्याय च॥ ७॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥
अश्मा च मे, मृत्तिका च मे, गिरयश्चमे, पर्वताश्चमे, सिकताश्चमे, वनस्पतयश्चमे, हिरण्यञ्चमे, अयश्चमे, सीसञ्चमे, त्रपुश्चमे, श्यामंचमे, लोहितायसंचमे, अग्निश्चम, आपश्चमे, वीरुधश्चम, ओषधयश्चमे, कृष्टपच्यञ्चमे, अकृष्टपच्यञ्चमे, ग्राम्याश्चमे, पशव आरण्याश्चमे, वित्तंचमे, वित्तिश्चमे, भूतंचमे, भूतिश्चमे, वसुचमे, वसतिश्चमे, कर्मचमे, शक्तिश्चमे, अर्थश्चम, एमश्चम, इत्याचमे, गतिश्चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च।
नमः पूर्वजाय चापरजाय च॥ १॥
नमो मध्यमाय चाऽप्रगल्भाय च।
नमो बुध्न्याय च जघन्याय च॥ २॥
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च।
नम आशुषेणाय चाशुरथाय च॥ ३॥
नमो बिल्मिने च कवचिने च।
नमो वर्मिणे च वरूथिने च॥ ४॥
नमः शूराय चावभेदिने च।
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च॥ ५॥

नमो याम्याय च क्षेम्याय च।
नम उर्वर्याय च खल्याय च।। ६।।
नमः श्लोक्याय चावसान्याय च।
नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च।
नमो वन्याय च कक्ष्याय च।। ७।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

अग्निश्चम इन्द्रश्चमे, सोमश्चम, इन्द्रश्चमे, सविताचम, इन्द्रश्चमे, सरस्वती चम, इन्द्रश्चमे, पूषा चम, इन्द्रश्चमे, बृहस्पतिश्चम, इन्द्रश्चमे, मित्रश्चम, इन्द्रश्चमे, वरुणश्चम, इन्द्रश्चमे, धाताचम, इन्द्रश्चमे, त्वष्टा चम, इन्द्रश्चमे, मरुतश्चम, इन्द्रश्चमे, विश्वेदेवाश्चम, इन्द्रश्चमे, पृथिवीचम, इन्द्रश्चमे, अन्तरिक्षं चम, इन्द्रश्चमे, द्यौश्चम, इन्द्रश्चमे, समाश्चम, इन्द्रश्चमे, नक्षत्राणि चम, इन्द्रश्चमे, दिशश्चम, इन्द्रश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च।।
नमो निषिङ्गिणे चेषुधिमते च।
नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च, नमः सायुधायच सुधन्वनेच।।
नमः सृत्याय च पथ्याय च।
नमः काट्याय च नीप्याय च।।
नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।
नमः कुल्याय च सरस्याय च।।
नमः कूट्याय चावट्याय च।
नमो वर्ष्याय चाऽवर्ष्याय च।।
नमो मेध्याय च विद्युत्याय च।
नमो वीध्र्याय चातप्याय च।।

नमो वात्याय च रेष्म्याय च।
नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥

अंशुश्चमे, रश्मिश्चमे, अदाभ्यश्चमे, अधिपतिश्चम, उपांशुश्चमे, अन्तर्यामश्चम, ऐन्द्रावायवश्चमे, मैत्रावरुणश्चम, आश्विनश्चमे, प्रतिप्रस्थानश्चमे, शुक्रश्चमे, मन्थीचम, आग्रायणश्चमे, क्षुल्लक-वैश्वदेवश्चमे, ध्रुवश्चमे, वैश्वानरश्चम, ऐन्द्राग्नश्चमे, वैश्वदेवश्चमे, मरुत्वतीयश्चमे, महेन्द्रीयश्चमे, सावित्रश्चमे, सारस्वतश्चमे, पत्नीवतश्चमे, हारियोजनश्चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

नमः सोमाय च रुद्राय च।
नमस्ताम्राय चारुणाय च॥
नमः शङ्गवे च पशुपतये च।
नम उग्राय च भीमाय च॥
नमो हन्त्रे च हनीयसे च।
नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च॥
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो।
नमस्ताराय॥
नमः शम्भवे च मयोभवे च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च॥
नमः शिवाय च शिवतराय च।
नमः किंशल्याय च क्षयणाय च॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥

इध्माचमे, स्त्रुचश्चमे, चमसश्चमे वायव्यानि च मे, द्रोणकलशश्चमे, पूतभृच्चमे, अपूतभृच्चमे, ग्रावाणश्चमे, अधिषवणश्चमे,

अवभृथश्चमे, स्वगाकारश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च।
नमः पुलस्तिने च कपर्दिने च।।
नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च।
नमस्तल्प्याय च गेह्याय च।।
नमः पर्यायचावार्याय च।
नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च।।
नमस्तीर्थ्याय च कुल्याय च।
नमः फेन्याय च शिष्प्याय च।।
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च।
नमो ह्रदव्याय च निवेष्प्याय च।।
नमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्याय च।
नमः शुष्क्याय च हरित्याय च।।
नमो लोप्याय चोलप्याय च।
नमः पांसव्याय च रजस्याय च।।
नमः सूर्म्याय चोर्म्याय च।
नमः पर्ण्याय च पर्णशादाय च।।
नम आखिदते च प्रखिदते च।
नमोऽभिघ्नते चापगुरमानाय च।।
नमः आखिदाय च विखिदाय च।।
नमो वः किरिकेभ्यो, देवानां ह्रदयेभ्यो।
नमो विचिनुत्केभ्यो, नमो विक्षीणकेभ्यो, नम आनिर्हतेभ्यः।।
अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।
अग्निश्चमे, घर्मश्चमे, अर्कश्चमे सूर्यश्चमे, प्राणश्चमे, अश्वमेधश्चमे, पृथिवीचमे, दितिश्चमे, अदितिश्चमे, द्यौश्चमे, शक्करीरङ्गुलयो

दिशश्चमे, यज्ञेन कल्पतां, व्रतं चर्तुश्च संवत्सरश्च तपश्चाहोरात्रे, ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरश्चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित, आसां प्रजानामेषां पुरुषाणामेषां पशूनां माभैर्मा रुङ्मा नः किञ्चनाऽममत्, इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीरायप्रभरामहे मतीः।

यथा नः शमऽसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्। या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजीः, शिवारुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे। परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतेरघायोः, अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुषु मीढुस्तो-काय तनयाय मृड। मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव, परमेवृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान उच्चर पिनाकम्। बिभ्रदुच्चर विकिरिड विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः, यास्ते सहस्त्रं हेतयोऽन्येऽस्मन्निव पान्तु ताः॥

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्॥

गर्भाचमे, वत्साचमे, त्र्यविच्चमे, त्र्यवी चमे, दित्यवाट् चमे, दित्यौहीचमे, पञ्चाविच्चमे, पञ्चावीचमे, त्रिवत्साश्चमे, त्रिवत्सचमे, तुर्यवाट्चमे, तुर्यौहीचमे,पष्टवाट्चमे, पष्टौहीचम, उक्षाचमे, वशाचमे, अनड्वांश्चमे, धेनुश्चम, ऋषभश्चमे, वेहश्चमे॥ यज्ञेन कल्पताम्॥

सहस्त्रधा सहस्त्राणि हेतयस्तव बाह्वोः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकुरु॥
असंख्याताः सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ १॥
येऽस्मिन्महत्यऽर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ २॥

ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिताः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ३॥

ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा शर्वा अधःक्षमाचराः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धान्वानि तन्मसि॥ ४॥

ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५॥

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतोजनान्।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ७॥

ये पथीनां पथि रक्षय ऐड मृदाय व्युधः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ८॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषिङ्गिणः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ९॥

य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ १०॥

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीची र्दशोदीचीर्द्शोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो मृडयन्तु, ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ १॥

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये अन्तरिक्षे, येषां वातमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ २॥

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां, येषामऽन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु, नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।। ३।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

एकाचमे, तिस्त्रश्चमे, तिसृश्चमे, त्रयस्त्रिंशच्चमे, चतस्त्रश्चमे, अष्टौचमे, अष्टचमे, अष्टाचत्वारिंशत् चमे, वाजश्च, प्रसवश्चाऽ-पिजश्च क्रतुश्च वाक्पतिश्च वसुश्च स्वर्मौर्धो मूर्धावैयशनो व्यश्वाँन आन्त्योऽन्त्यो भौवनो भुवनस्य पतिः प्रजापतिरधि-पतिरियन्ते राण्मित्रो यन्तासि यमन ऊर्जेत्वा वृष्टचैत्वा प्रजानां त्वाऽधिपत्याय, आयुर्यज्ञेन कल्पतां, मनो यज्ञेनकल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेनकल्पतां, श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, वाग्यज्ञेन कल्पतामाऽऽत्मा यज्ञेन कल्पतां, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां, पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।।

ऋक्च सामश्च स्तोमश्च यजुश्च बृहद्रथन्तरश्च स्वर्देवा अगन्म प्रजापतेः प्रजा अभूवन्नऽमृता अभूम वेट्स्वाहा।।

वाजस्य नु प्रसवा इति षट्''।।

ॐ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊतीर्विश्वे भवन्त्वऽग्नयः समिद्धाः। विश्वे मादेवा अवसा गमन्निह विश्वमस्तु द्रविणं वाजे अस्मिन्।। १।।

आ[१] मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादाऽमा द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।। २।।

वाजस्य नु प्रमवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्म

साविषत्॥ ३॥

वाजो मा सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः।
वाजो मा विश्वैर्देवैर्धनसाता इहावतु॥ ४॥

वाजो मे अद्य प्रसुवातिदानं वाजो देवान् हविषा वर्धयाति।
वाजस्य हि प्रसवेनान्नमिति विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम्॥ ५॥

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवानृतुभिः कल्पयाति।
वाजस्य हि प्रसवेनान्नमेति सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम्॥ ६॥

सं मा सृजामि पयसः पृथिव्याः सं मा सृजाम्यद्भिरौषधीभिः।
सोऽहं वाजस्य नौम्यग्नेः॥ ७॥

"तेजोसि" पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
तर्पणम्॥

मद्यं पीत्वा गुरुदारांश्च गत्वा स्तेयं कृत्वा ब्रह्महत्यां विधाय।
भस्मच्छन्नो भस्मशय्यांशयानो रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः॥ १॥

नित्यं दण्डी नित्य यज्ञोपवीती नित्यं ध्याता भस्मना कर्मबन्धी।
रुद्रं दृष्ट्वा देवमीशानमुग्रं याति स्थानं तेन साकं तदीयम्॥ २॥

अनेन रुद्रमन्त्रसहित चमकानुवाक् पाठेन/स्नानेन/होमेन/
पुष्पार्चनेन/आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं
सद्गुरुप्रसादप्राप्त्यर्थं भगवान्, भवो देवः ८ शतरुद्रेश्वरः,
मृत्युञ्जयभट्टारकः पार्वतीसहितः परमेश्वरः अमृतेश्वर भैरवः
प्रीयतां प्रीतोऽस्तु॥

॥ जय गुरुदेव॥

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है–

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मां प्रापयन्ति ते।।

जो मुझे, सदा समाहित होके प्रीति के साथ बिना भूले पूजा करते हैं, मैं उन्हें वह बुद्धियोग प्रदान करता हूँ जिससे वे मुझे प्राप्त कर सकते हैं और दूसरों के लिए भी मेरी प्राप्ति का कारण बन सकते हैं। इस प्रकार योगीश्वर श्रीकृष्ण हमें सिखाते हैं कि वह उनकी संपूर्ण रूप से रक्षा करते हैं और सब कुछ उनके भोग के लिए तैयार रखते हैं, जो वास्तविक रूप से ईमानदार हों।।